B.A (HONOURS) PART – 1
PHILOSOPHY – PAPER 1

Dr.Raj Narayan Singh

Department of philosophy

R.R.S College, Mokama

Patliputra University, Patna

अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म का स्वरूप

- ब्रह्म की अवधारणा आचार्य शंकर के अद्वैतवादी दर्शन की केंद्र बिंदु है। आचार्य शंकर ब्रह्म को परमतत्व के रूप में स्वीकार करते हैं। ब्रह्म को शंकर आत्मा भी कहते हैं। वह शुद्ध चैतन्य है और समस्त ज्ञान तथा अनुभव का अधिष्ठान है, वह स्वतः सिद्ध तथा स्वप्रकाश है। उसका निराकरण असम्भव है, क्योंकि जो निराकर्त्ता है वही उसका स्वरूप है।

य एव ही निराकर्त्ता तदेव तस्य स्वरूपं

महर्षि याज्ञवल्क्य ने स्वयं उद्घोष किया है कि स्वतः सिद्ध और स्वप्रकाश विज्ञाता के विज्ञान का या द्रष्टा की दृष्टि का लोप कभी नहीं हो सकता।

नहि द्रष्टुर्दृष्टेः विपरिलोपो विद्यते,.....

अविनाशित्वात् ।

- आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म की ही एकमात्र सत्ता है। ब्रह्म को छोड़कर शेष सभी वस्तुएँ असत्य है

  “ ब्रह्म सत्यं जगत मिध्या जीवो ब्रह्मैव नापरः”

- आचार्य का ब्रह्म सभी सभी प्रकार के भेदों (सजातीय,विजातीय और स्वगत) से रहित है।
- आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म अनिर्वचनीय है। वह निर्गुण, निर्विशेष होने के कारण अलक्षण है। परिणामतः उसे विचार का विषय नहीं बनाया जा सकता है। अतः ब्रह्म का विवेचन निषेधमुखेन ही सम्भव है।

- अद्वै वेदान्त में ब्रह्म के दो लक्षण प्राप्त होते हैं-
  1. तटस्थ लक्षण
  2. स्वरूप लक्षण
- ब्रह्म का तटस्थ लक्षण मात्र व्यावहारिक दृष्टि से सत्य है परंतु पारमार्थिक दृष्टि से जगत के संबंध को लेकर ब्रह्म पर जितने भी विशेषण आरोपित किये जाते हैं वह उससे अतीत हैं।
- सृष्टि- कर्तृत्व ब्रह्म का तटस्थ लक्षण है।
- आचार्य शंकर ब्रह्म के स्वरूप लक्षण का कथन करके उसके वास्तविक रूप को उद्घाटित करते हैं। इस दृष्टि से ब्रह्म सच्चिदानंद स्वरूप है।

- अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म के दो रूप माने जाते हैं –

1. निर्गुण ब्रह्म – निर्विकल्प, निरूपाधिक, निर्विशेष
2. सगुण ब्रह्म – सविकल्प, सोपाधिक, सविशेष

- आचार्य शंकर के अनुसार ब्रह्म पारमार्थिक दृष्टि से निर्गुण है अर्थात वृद्धि द्वारा कल्पित कोई भी रूप उसका वास्तविक रूप नहीं है।
- जगत के कारण अर्थात व्यावहारिक दृष्टि से ब्रह्म सगुण है। इस अर्थ में वह माया से संयुक्त है और ईश्वर कहलाता है।

★★★★★★★★★